परमात्म ऊर्जा

जितना लाइट की परसेंटेज ज़्यादा होगी। उतना ही सभी बातों में स्पष्ट देखने में आएगा। अगर लाइट की परसेंटेज कम है तो खुद भी पुरुषार्थ में स्पष्ट नहीं होगा और जिसको मार्ग बताते हैं वह भी सहज और स्पष्ट अपने मार्ग और मंज़िल को जान नहीं सकेंगे। जिसकी लाइट पॉवरफुल होगी वह न खुद उलझते न दूसरे को उलझाते हैं। तो अपने पुरुषार्थ और अपनी सर्विस से देख सकते हो कि जिन्हों की सर्विस करते हो उन्हों का मार्ग स्पष्ट होता है। अगर मार्ग स्पष्ट नहीं होता है तो अपनी लाइट की परसेंटेज की कमी है। कई खुद कभी कदम-कदम पर ठोकर खाते हैं और उनकी रचना भी ऐसी होती है। अभी आप एक-एक मास्टर रचयिता हो तो मास्टर रचयिता अपनी रचना से भी अपनी पॉवर को परख सकते हैं। जैसा बीज होता है वैसा ही फल निकलता है। अगर बीज पॉवरफुल नहीं होता है तो कहाँ-कहाँ फूल निकलेंगे, फल निकलेंगे लेकिन स्वीकार करने योग्य नहीं होते हैं। जो बहुत सुन्दर व खुश्बूदार होंगे, जो फल अच्छा होगा उनको ही खरीद करेंगे ना! अगर बीज ही पॉवरफुल नहीं होता है तो रचना भी तो वैसी ही पैदा होती, वह स्वीकार करने योग्य नहीं होती। इसलिए अपनी लाइट की परसेंटेज को बढ़ाइये। दिन-प्रतिदिन सभी के मस्तक और नयन ऐसे ही सर्विस करें जैसे आप का प्रोजेक्टर शो सर्विस करता है। कोई भी सामने आयेंगे वह चित्र आपके नयनों में देखेंगे, नयन देखते ही बुद्धियोग द्वारा अनेक साक्षात्कार होंगे। ऐसे साक्षात्कार मूर्त अपने को बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे जो सदैव साक्षी की स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे। उनका मस्तक सदैव चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा।

होली के बाद सांग बनाते हैं ना! देवताओं को सजाकर मस्तक में बल्ब जलाते हैं। यह सांग क्यों बनाते हैं? यह किस समय का प्रैक्टिकल रूप है? इस समय का। जो फिर आपके यादगार बनाते आते हैं। तो एक-एक के मस्तक में लाइट देखने में आये। विनाश के समय भी यह लाइट रूप आपको बहुत मदद देगी। कोई किस भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेंगे। वह इस देह को न देख आपके चमकते हुए इस बल्ब को देखेंगे। जो बहुत तेज़ लाइट होती है और उसको जब देखने लगते हैं तो दूसरी सारी चीज़ छिप जाती है। वैसे ही जितनी-जितनी आप सभी की लाइट तेज़ होगी उतना ही उन्हों को आपकी देह देखते हुए भी नहीं देखने आएगी। जब देह को देखेंगे ही नहीं तो तमोगुणी दृष्टि और वृत्ति स्वतः ही खत्म हो जाएगी। यह परीक्षाएं आनी हैं। सभी प्रकार की परिस्थितियां पास करनी हैं।

कथा सरिता

जहाँ इच्छाशक्ति है... वहाँ सफलता है

विल्मा रूडोल्फ का जन्म अमेरिका के टेनेसी प्रान्त के एक गरीब घर में हुआ था। चार साल की उम्र में विल्मा रूडोल्फ को पोलियो हो गया और वह विकलांग हो गई। विल्मा रूडोल्फ कैलिपर्स के सहारे चलती थी। डॉक्टरों ने हार मान ली और कह दिया कि वह कभी भी ज़मीन पर चल नहीं पायेगी।

विल्मा रूडोल्फ की माँ सकारात्मक मनोवृत्ति महिला थी और उन्होंने विल्मा को प्रेरित किया और कहा कि तुम कुछ भी कर सकती हो, इस संसार में नामुमकिन कुछ भी नहीं।

विल्मा ने अपनी माँ से कहा, "क्या मैं दुनिया की सबसे तेज धावक बन सकती हूँ?"

माँ ने विल्मा से कहा कि ईश्वर पर विश्वास, मेहनत और लगन से तुम जो चाहो वह प्राप्त कर सकती हो।

नौ साल की उम्र में उसने ज़िद्द करके अपने ब्रेस निकलवा दिए और चलना प्रारम्भ किया। कैलिपर्स उतार देने के बाद चलने के प्रयास में वह कई बार चोटिल हुई एवं दर्द सहन करती रही लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी एवं लगातार कोशिश करती रही। आखिर में जीत उसकी ही हुई और एक-दो वर्ष बाद वह बिना किसी सहारे के चलने में कामयाब हो गई।

उसने 13 वर्ष की अवस्था में टेनेसी राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उसे कोच एड टेम्पल मिले। विल्मा ने टेम्पल को अपनी इच्छा बताई और कहा कि वह सबसे तेज धाविका बनना चाहती है। कोच ने उससे कहा, "तुम्हारी इसी इच्छाशक्ति की वजह से कोई भी तुम्हें रोक नहीं सकता और मैं इसमें तुम्हारी मदद करूँगा।"

विल्मा ने लगातार कड़ी मेहनत की एवं आखिरकार उसे ओलम्पिक में भाग लेने का मौका मिल ही गया। विल्मा का सामना एक ऐसी धाविका (जुत्ता हेन) से हुआ जिसे अभी तक कोई नहीं हरा सका था।

पहली रेस 100 मीटर की थी जिसमें विल्मा ने जुत्ता को हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया एवं दूसरी रेस 200 मीटर में भी विल्मा के सामने जुत्ता ही थी इसमें भी विल्मा ने उनको हरा दिया और दूसरा स्वर्ण पदक जीत लिया।

तीसरी दौड़ 400मीटर की रिले रेस थी और विल्मा का मुकाबला एक बार फिर जुत्ता से ही था। रिले में रेस का आखिरी हिस्सा टीम का सबसे तेज एथलीट ही दौड़ता है। विल्मा की टीम के तीन लोग रिले रेस के शुरूआती तीन हिस्से में दौड़े और आसानी से बेटन बदली।

जब विल्मा के दौड़ने की बारी आई, उससे बेटन छूट गई। लेकिन विल्मा ने देख लिया कि दूसरे छोर पर जुत्ता हेन तेजी से दौड़ी चली आ रही है। विल्मा ने गिरी हुई बेटन उठायी और मशीन की तरह तेजी से दौड़ी तथा जुत्ता को तीसरी बार भी हराया और अपना तीसरा गोल्ड मेडल जीता।

इस तरह एक विकलांग महिला (जिसे डॉक्टरों ने कह दिया था कि वह कभी चल नहीं पायेगी) विश्व की सबसे तेज धाविका बन गई और यह साबित कर दिया कि इस दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं।

रीवा-झिरिया (म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति धाम सेवाकेन्द्र पर बुज़ुर्गों के लिए आयोजित 'बुज़ुर्ग समाज की धरोहर' कार्यक्रम में परिवार में रहने वाले हीरालाल अग्रवाल जी को 90 वर्ष पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्य, युवा वर्ग, नगर के सभी समाजसेवी, ब्र.कु. निर्मला दीदी तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बालागाम-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' के कार्यक्रम में ब्र.कु. गीता बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,भीनमाल,राज., ब्र.कु. रूपा बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,केशोद, वनिता बहन वाढर,जिला पंचायत सदस्या, प्रवीणा बहन पटेल,प्रमुख,जिला महिला मोर्चा, धीरुभाई चुडासमा,प्रमुख,केलवली मंडल, रमेश भाई रूपावटीया,प्रमुख,पटेल समाज, ब्र.कु. गीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजकोट-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में इलेक्ट्रिक व्यापारियों के लिए 'खुशी का व्यापार' विषय पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्र.कु. अंजू बहन ने सभी को खुशी के व्यापार के टिप्स दिये। तीस व्यापारी बंधुओं ने परिवार सहित कार्यक्रम का लाभ लिया।

जूनागढ़-गुज.। ब्र.कु. मणि बहन मोड़वाडिया,लंदन के जूनागढ़ सेवाकेन्द्र में आने पर आयोजित सम्मान कार्यक्रम में मेर समाज जूनागढ़ के अग्रणी भाई-बहनें, ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात ज़ोन की एडिशनल चीफ ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. बीना बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पुणे-पिंपरी (महा.)। भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती के अवसर पर पिंपरी चौक और महानगरपालिका में उनकी प्रतिमा को माल्यार्पण कर अभिवादन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. सुरेखा दीदी, पिंपरी चिंचवड कमिश्नर राजेश पाटील, समाज प्रबोधनकार शारदा ताई मुंडे, समाज सेविका संगीता तापकीर, रुपाली जगताप तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कटनी-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान का उद्घाटन करते हुए ट्रैफिक पुलिस अधिकारी, ब्र.कु. रानी दीदी, सिविल लाइन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी तथा ब्र.कु. भाई।